पितृपक्ष

सिद्धयोग पथ पर एक परम्परा जिसका हम पालन करते हैं, वह है पितृपक्ष। इसका अर्थ होता है 'पितरों या पूर्वजों को समर्पित पक्ष।' दो सप्ताहों की यह अवधि, भारतीय पंचांग की चन्द्रतिथि के अनुसार अश्विन माह में आती है और ग्रेगेरियन कैलेण्डर के अनुसार सितम्बर में, या अक्टूबर माह के आरम्भ में आती है। इस परम्परा का स्रोत भारत के प्राचीन शास्त्र ऋग्वेद में मिलता है। शास्त्रीय ग्रन्थों में व मुख्यतः पुराणों[१] में, पितृपक्ष का उल्लेख एक ऐसे शक्तिपूर्ण अवसर के रूप में किया गया है जब हम उन सभी के प्रति सम्मान व आभार व्यक्त करते हैं जो हमसे पहले आकर हमारे लिए मार्ग प्रशस्त कर गए हैं यानी हमारे दिवंगत सम्बन्धीगण, मित्र, सहायक, और असंख्य आत्माएँ जिन्होंने हमें जीवन में कृपा, प्रज्ञान, संरक्षण और प्रेम प्रदान किया है।

वैदिक परम्परा के अनुसार, "पितृ या पूर्वज" शब्द के अन्तर्गत मातृकुल व पितृकुल की तीन दिवंगत पीढ़ियाँ मानी जाती हैं यानी हमारे माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, और परदादा-परदादी, परनाना-परनानी। इसमें अन्य सम्बन्धी जैसे दिवंगत पति या पत्नी, बच्चे, भाई-बहन, चाचा-ताऊ, बुआ, मामा-मौसी आदि सभी सम्बन्धी और सास-ससुर भी सम्मिलित हैं। पितृपक्ष के दौरान मित्रों, पड़ोसियों, शिक्षकों, प्रतिपालकों, और यहाँ तक कि वे प्रिय पशु जो इस संसार से जा चुके हैं, उनका भी सम्मान किया जा सकता है।

गरुड़-पुराण के अनुसार, पितरों की उपासना करने से व्यक्ति को दीर्घायु, सन्तान-सुख, स्वर्ग, यश-आरोग्य, बल-बुद्धि, सौभाग्य, सुख-सम्पदा और धन-धान्य की प्राप्ति होती है।[२] विष्णु पुराण में बताया गया है कि जो व्यक्ति श्रद्धा-भक्ति से अपने पितरों के लिए श्राद्धकर्म करता है, वह समस्त संसार को प्रसन्न कर देता है।[३]

पितृपक्ष का अनुष्ठान करना, प्रकृति की शक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने का एक तरीक़ा है। हम, जो इस संसार में रह रहे हैं और वे, जो परलोक गमन कर चुके हैं, सभी उसी दिव्य चित्शक्ति का भाग हैं जो इस सृष्टि का आधार है। अतः, प्रार्थनाओं व सद्भावनाओं का आदान-प्रदान, हमारे जीवन में और जो इस संसार में हमसे पहले रह चुके हैं, उनके जीवन में मांगल्य लाता है।

पितृपक्ष के अनुपालन द्वारा, व्यक्ति अपने आध्यात्मिक अभ्यासों के पुण्य, आशीर्वाद के रूप में दिवंगत आत्माओं को प्रदान करता है। उनके लिए की गई आराधना से प्रसन्न होकर, पितृगण बदले में उनकी आगे की पीढ़ियों व मित्रों को अपने आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

सुझावित अनुष्ठान

परम्परागत रूप से, पितृपक्ष के दौरान अपने पितृगण को आध्यात्मिक अभ्यास अर्पित किए जाते हैं जैसे ध्यान, नामसंकीर्तन, मन्त्र-जप और प्रार्थना। अपने दिवंगत पितरों व मित्रों को आशीर्वाद भेजने का एक और सशक्त तरीक़ा है, उनके लिए श्रीगुरुगीता का पाठ अर्पित करना।

अपने पितृगण हेतु हम उनकी ओर से, लाभ-निरपेक्ष संस्थाओं जैसे एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन को दक्षिणा अर्पित कर सकते हैं या धर्मार्थ संस्थानों को अन्न या वस्त्र दान कर सकते हैं।

सुझावित परिहार [जो कार्य नहीं किए जाने चाहिए]

यह सुझाव दिया जाता है कि इन पन्द्रह दिनों में लोग कोई नई परियोजना या मुख्य कार्य आरम्भ न करें। लम्बी यात्राएँ जैसे एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप जाना या अन्तर्राष्ट्रीय यात्राएँ नहीं की जानी चाहिए, परन्तु छोटी दूरी की हवाई यात्राएँ या कार द्वारा यात्रा की जा सकती हैं। यदि आपको लगता है कि आपका यात्रा करना आवश्यक है तो सतर्कता व सावधानी रखना और संरक्षण के लिए प्रार्थना करना अच्छा रहेगा। पितृपक्ष के दौरान तीर्थयात्रा या साधना का आरम्भ करने के लिए की गई यात्रा शुभ मानी जाती है।

कृपया इन निर्देशों को सुझाव के रूप में लें और अपनी परिस्थिति के अनुसार सबसे उचित योजना बनाएँ।

---

[१] पुराण, भारत के संस्कृत भाषा के ग्रन्थ हैं जिनमें भगवान की लीलाएँ और जगत की उत्पत्ति, स्थिति व संहार का वर्णन है।

[२] गरुड़ पुराण, १०.५.५७-५९: संक्षिप्त गरुड़ पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

[३] विष्णु पुराण, ३.१४.२: विष्णु पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।